THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

सुनो - परमेश्वर हमसे कुछ कह रहा है

Listen—God is speaking to us!

The Christian Science Monitor
May 31 – June 6, 2008

सुबह का अलार्म, मधुर संगीत, वाहनों के ऊँचे हार्न, कम्पयूटर के की बोर्ड की खट खट, दूर एक मस्जिद से आती हुई प्रेरक ध्वनि तरगें – यह सारी आवाजें हम भारत में प्रतिदिन सुनते हैं। कुछ आवाजें अच्छी लगती हैं और कुछ इतनी अच्छी नहीं लगती। यहाँ तक कि एक शाँत स्थान पर भी जब हम केवल अपने स्वंय के विचारों को सुन रहे होते हैं, हम पाते हैं कि वे प्रसन्नतादायक तथा संतोषजनक हो सकते हैं या चिन्ताजनक तथा दुःखदायी।

प्रार्थना एक और प्रकार से सुनना है। बहुत से लोग **परमेश्वर** से बातें कर के प्रार्थना करने के आदि होते हैं – **उसे*** किसी जरूरत के बारे में बताकर या **उसे** पूर्ण करने के लिए कह कर। लेकिन प्रार्थना सुनने को भी सम्मिलित करती है – **परमेश्वर** को शांति से सुनने को तथा **उसकी** आज्ञा मानने को।

संसार में लोगों ने प्रमाणित किया है कि **परमेश्वर** को सुनना तथा **उससे** मिली हुई प्रेरणा को मानना केवल सुनने वाले को ही नहीं अपितु परिवारों, गिरजाघरों, कार्यस्थलों तथा समुदाय को भी आशीषित करता है। उस समय भी जब हम पूर्णतः असक्षम महसूस करते है, हम प्रार्थना कर सकते है तथा **परमेश्वर** से मिले प्रेरक विचार – **उसके** दिव्य संदेश –आऐंगे तथा हमारे विचारों को **आत्मा** तक तथा आध्यात्मिक उत्तरों तक प्रेरित कर देंगें जिनकी हमें जरूरत होगी।

दिव्य संदेशों की प्रवृति में अंतर्दर्शन मेरी बेकर एडी द्वारा लिखी 'साँयस एंड हैल्थ विद् की दू दि स्क्रिपर्चस' नामक पुस्तक में दिए गए हैं। श्रीमति एडी जिन्होनें क्रिश्चियन साँयस की खोज की, उन्होंने दिव्य संदेशों की व्याख्या इस तरह की, '**परमेश्वर** के विचार मानव तक जाते हुए, आध्यात्मिक अंर्तज्ञान, पवित्र तथा सम्पूर्ण, अच्छाई, पवित्रता तथा अनश्वरता की प्रेरणा, सारी बुराई, कामुकता तथा नश्वरता का खंडन करते हुए'(पृष्ठ 581)।

विपदा के समय लोगों ने पाया है कि प्रार्थना से बेचैन विचारों को शाँत आश्वासन के साथ बदला जा सकता है। दिव्य **प्रेम** (**परमेश्वर** का एक और नाम) हमारे विचारों का सुधार कर सकता है तथा इसका निष्पक्ष प्रेम का प्रवाह हमें उचित मार्ग पर ला सकता है।

कभी–कभी भय, क्रोध तथा कुछ और नकारात्मक लक्षण हमारे विचारों पर हावी होते प्रतीत होते हैं। साँयस एंड हैल्थ प्रस्तुत करती है '**आत्मा, परमेश्वर** को सुना जाता है जब इन्द्रियाँ शाँत होती है' (पृष्ठ 89)। इसका यह अर्थ हो सकता है कि हमें इन अन्य 'आवाजों' को शाँत करने की जरूरत है, यह जान कर कि **परमेश्वर** की अच्छाई ही एकमात्र संदेश है जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं और केवल यही वह है जो हमारी परिस्थिति के अनुकूल है। जैसे हम भौतिक इन्द्रियों को शाँत कर देते हैं, हम **परमेश्वर** के निर्देशन को सुनने के तथा हमारी जिन्दिगियों में **उसकी** अच्छाई को कार्य करते हुए देखने के काबिल हो जाऐंगे।

जब हम समुदाय के लिए निस्वार्थ भाव से प्रार्थना करते हैं, यह सुनना एक पड़ौसी की जरूरत के बोध की ओर ले जा सकता है। उदाहरण के लिए, चण्डीगढ़ में एक अनाथ आश्रम के पास रहने वाले लोग अकसर आश्रम में भोजन तथा अन्य जरूरतों के लिए पैसे दान करने जाते हैं। एक दिन एक व्यक्ति समुदाय के लिए प्रार्थना कर रहा था और उसे वहाँ जाने की तीव्र इच्छा हुई। उसने दिव्य संदेश का पालन किया और उसी दिन वहाँ गया।

जब वह कार खड़ी कर रहा था, वहाँ की संचालक स्त्री नंगे पाँव भागी आई और कहा, '**परमेश्वर** ने तुम्हें भेजा है'। वे लोग अत्याधिक प्रार्थना कर रहे थे क्योंकि उन्हें एक आपातकालीन परिस्थिति के लिए पैसों की आवश्यक्ता थी। उस व्यक्ति ने तुरन्त पैसे दान किए और बाइबल के इस सत्य के अपने जीवन में प्रमाणित होने की गवाही के लिए आभार प्रकट किया 'और तुम्हारे कान पीछे से एक शब्द सुनेंगे, यह कहते हुए, यह रास्ता है, तुम इस में चलो, कब तुम्हें दाएं हाथ मुड़ना है तथा कब तुम्हें बाएं हाथ मुडना है' (यशायाह 30:21)।

सुनने तथा आज्ञा पालन ने कभी भी किसी को आशीषों से वचिंत नहीं किया। आओ हम भी **परमेश्वर** की उस मधुर आवाज को सुनने की कोशिश करें जो हम से कुछ कह रही है। वायलट हये ने इसे एक कविता के माध्यम से सुंदरता से व्यक्त किया है जो कि क्रिश्चियन साँयस हिमनल में एक भजन भी है :

मुझे तुम्हारी आज़ादी के रास्ते से प्रेम है, दाता
तुम्हारी सेवा करना मेरा चुनाव है,
सत्य की तुम्हारी स्पष्ट रोशनी में, मैं उठता हूँ
और तुम्हारी आवाज को सुनता हूँ,
में तुम्हारे पुराने और नए वादों को सुनता हूँ,
जो सारे भय को समाप्त कर देते हैं,
मेरी उपस्थिति अभी भी तुम्हारे साथ जाएगी
तथा मैं तुम्हें शाँति दूँगा ।

न॰ 136

* *जो शब्द गाढ़े अक्षरों में लिखे हैं, वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।*

For this translation in English and other translations in Hindi, please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.